Vol. 11, Issue-2 (July 2022) pp. 189-202 Sangeet Galaxy e-Journal [ISSN: 2319-9695]

UGC-CARE enlisted & Indexed in the EBSCO International Database of Journals

निम्बार्क सम्प्रदाय के नित्य (अष्टयाम) एवं वर्षोत्सवों में सांगीतिक प्रयोग की प्रधानता

डॉ0 गौरव शुक्ल
सहायक आचार्य (सितार)
संगीत विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय
जोधपुर, राजस्थान
Email: gauravshukl.simple@gmail.com

सारांश

चतु: वैष्णव संप्रदाय में निंबार्क संप्रदाय का अपना अलग स्थान एवं महत्व है. सर्वप्रथम इस संप्रदाय द्वारा राधा कृष्ण की युगल उपासना प्रारंभ किया गया. इस संप्रदाय में राधा कृष्ण की सेवा एवं पूजा संगीत के माध्यम से की जाती है. यह परंपरा इस संप्रदाय के आचार्य नारद मुनि द्वारा प्रारंभ हुई और यह अनवरत रूप से आज तक चली आ रही है. यहां नित्य सेवा एवं वार्षिक उत्सव में संगीत के तीनों विधाओं का प्रयोग किया जाता है नित्य सेवा के अंतर्गत श्री राधा कृष्ण की अष्टयाम सेवा आती है जिस प्रकार मनुष्य अपना नित्य क्रिया करता है उसी प्रकार भगवान का भी सेवा इस संप्रदाय ने किया जाता है. प्रातः काल मंगला आरती से लेकर रात्रि कालीन शयन आरती तक यह सेवा की जाती है. जिसमें संगीत के माध्यम से इस संप्रदाय के आचार्यों द्वारा रचित पदों का गायन समय अनुसार रागो के द्वारा किया जाता है . इस संप्रदाय में वार्षिक उत्सव का भी अपना अलग महत्व है. यहां मुख्य रूप से संप्रदाय के आचार्यों का पाटोत्सव, कृष्ण जन्माष्टमी, राधा अष्टमी ,झूला उत्सव आदि उत्सवों को बड़े धूमधाम से मनाया जाता है. इन उत्सवों में संगीत का विशेष महत्व होता है. संप्रदाय के आचार्यों द्वारा रचित उत्सवों के पदों का गायन के माध्यम से विशेष सेवा पूजा की जाती है. इस गायन विधा को इस संप्रदाय में समाज गायन के नाम से जाना जाता है जो प्रायः लुप्त होता जा रहा है. इस शोध पत्र के माध्यम से इस संप्रदाय में अष्टयाम सेवा एवं वार्षिक उत्सव में सांगीतिक प्रयोग की प्रधानता को विस्तार से वर्णित करने का प्रयास किया हैं .

मुख्य बिन्दु - अध्यात्म, संगीत, निंबार्क संप्रदाय, अष्टयाम सेवा

निम्बार्क सम्प्रदाय में ईश्वर की उपासना दो प्रकार से की जाती है- पहला नित्य (अष्टयाम) सेवा व दूसरा वर्षोत्सव. इन दोनों ही प्रकार की सेवाओं में संगीत के विभिन्न शैलियों की प्रधानता देखने को मिलती है.

नित्य अष्टयाम सेवाओं के अन्तर्गत प्रातःकाल से शयन-पर्यन्त तक की सेवाएँ आती हैं. प्रतिदिन प्रातःकाल से शयन तक की उपासना में समय के अनुसार रागों में पदों का गायन किया जाता है. इसके विपरीत उत्सवों के अवसरों पर विशेष आयोजन किया जाता है. इन उत्सवों में भी विभिन्न सांगीतिक शैलियों का प्रयोग मिलता है. इन उत्सवों में

समाज-गायन का आयोजन प्रमुख रूप से होता है. इसमें आचार्यों द्वारा रचित पदों को ध्रुपद व धमार विधाओं में गाया जाता है.

सर्वप्रथम हम अष्टयाम सेवाओं पर दृष्टिपात करते हैं-

अष्टयाम सेवाओं का अभिप्राय आठ प्रहर की सेवाओं से है. जिस प्रकार मनुष्य अपने नित्य-कर्म स्नान, भोजन आदि करता है, उसी प्रकार इस सम्प्रदाय में भगवान की भी सेवा की जाती है. प्रातःकाल भगवान को शयन से उठाने से लेकर रात्रिकाल शयन तक की सेवाओं को ही अष्टयाम सेवा कहते हैं. इस सम्प्रदाय में इन सेवाओं को संगीत के माध्यम से किया जाता है. इन सेवाओं के विषय में निम्नवत् उल्लेख प्रस्तुत है-

मंगला:- प्रातःकाल प्रथम प्रहर में सर्वप्रथम मंगला आरती होती है. इसमें भगवान को नींद से जगाया जाता है. सर्वप्रथम शंखनाद होता है, तदन्तर भक्तजन प्रातः कालीन रागों में आलापचारी करके उन्हीं रागों में तालयुक्त होकर अनिबद्ध गायन के रूप में पदों का गान करते हैं, जिनमें से कुछ निम्नांकित हैं-

प्रात समै नव कुंज द्वार ह्वै
ललिता ललित बजाई बीना.
पौढ़े सुनत स्याम-श्रीस्यामा.
दंपति चतुर प्रवीन-प्रवीना.
अति अनुराग सुहाग परस्पर
कोककला निपुन नवीन-नवीना.
श्री विहारी दास बलि-बलि बंदसि पर
मुदित प्रान न्यौछावर कीना.[1]

पद

परी बलि कौन अनोखी बानि.
ज्यौं-ज्यौं भोर होत है त्यौं-त्यौं, पौढ़त हो पट तानि..
आरस तजहु अरुनई उदई, गई निसा रति मानि.
'श्री हरिप्रिया' प्रानधन जीवन, सकल सुखन की खानि..[2]

पद

स्यामा-स्याम सेज उठि बैठे,

[1] शरण, जय किशोर. स्तुति संकीर्तन, पृ. 31

[2] हरिव्यास देव जी, महावाणी, सेवा सुख, पद संख्या -13, पृ. 69

अरसि-परसि दोउ करत सिंगार.
इन पहिरी वाकी मोतिन माला,
उन पहिरयो वाको नवसर हार..
लटपट पेंच सँवारत स्यामा.
अलक सँवारत नंदकुमार,
'श्री भट' जुगल किसोर जी जूटी,
मेरे आँगन करत बिहार..[3]

पद

मुख सोधन सुख कुञ्ज सदन में, करत बिहारी बिहारनि दोऊ.
अलबेली अनिमिष आँखियन सों, सुन्दर बदन निहारनि दोऊ.
करि मुख बसन असन मंगल, आरोगि अँचय जल झारनि दोऊ.
'श्री हरिप्रिया' बैठाय सिंघासन, सज आरति सहचारनि दोऊ..[4]

मंगल आरती में प्रयक्त होने वाला पद-

मंगल कुंज में मंगल आरति. मंगल रंग रंगीली बारति.
मंगल मुख अरबिंद निहारति. मंगल मूरति हिय में धारति.
मंगल सब सहचरि अनुसारति. मंगल मोद विविध विस्तारति.
मंगल चौर लिये कर ढारति. मंगल मनसिज मन मनुहारति.
मंगल जै जै शब्द उचारति. मंगल 'श्री हरिप्रिया' विचारति..[5]

मंगला आरती के पश्चात् भगवान को स्नान कराने हेतु प्रयुक्त होने वाला पद-

निज सहचरि समुझाये दोऊ. न्हान कुञ्ज में आये दोऊ.
मणि चौकी पधराये दोऊ. ऊबटनां उबटाये दोऊ.
सरस सुगंध लगाये दोऊ. सौरभ नीर न्हवाये दोऊ.
मृदुल अंग अँगुछाये दोऊ. पाटम्बर पहराये दोऊ.
करन सिंगार सुहाये दोऊ. श्री हरिप्रिया हुलसाये दोऊ.[6]

---

[3] श्री भट्ट जी, युगल, युगल शतक, सेवा सुख, पद संख्या-37, पृ. 19

[4] हरिव्यास देव जी, महावाणी, सेवा सुख, पद संख्या-20, पृ. 73

[5] वही, पद संख्या-139, पृ. 218

[6] वही, पद संख्या-21, पृ. 73-74

स्नान कराने के पश्चात् भगवान का श्रृंगार किया जाता है, श्रृंगार के समय गाये जाने वाले सांगीतिक पद अग्रांकित हैं-

नख सिख सजि सिंगार विराजें.
लौ दरपन दिखरावति सुंदरि, कैसे आजु उदार विराजे ..
देखि देखि सोभा अँग अँग की, उमँने उरनि अपार विराजें.
'श्री हरिप्रिया' हितूजन जिय की, जीवन प्रान अधार विराजें.[7]

श्रृंगार के पश्चात् भगवान का श्रृंगार भोग किया जाता है, इसमें भी सांगीतिक पदों को गाया जाता है-

बैठे दोऊ सुकुँवार सिरोमनि, आरोगत हैं भोग सिंगार.
चामीकर चौकी पर सुन्दर, आनि धरयौ सहचरि भरथार.
आदर सहित देत कर कौरनि, कमल वदन करि करि मनुहार.
श्री हरिप्रिया प्रसंसि परसपर, प्रेम पुलकि अँग अँग अपार.[8]

श्रृंगार भोग के बाद भगवान का आचमन किया जाता है, आचमन के समय जिन पदों का गान किया जाता है, निम्न उल्लिखित हैं-

लौ झारी अँचवन अँचवावति.
हितू सहेली हित की चित की, समझि समझि हियरें हुलसावति.
दै मुख-वासु बिसाखा बीरी, लौ लौ ललिता भोग लगावति.
श्री हरिप्रिया तिलक मस्तक रचि, नीराजनि की सौंज सजावति.[9]

तत्पश्चात् भगवान की श्रृंगार आरती का विधान है, इसमें निम्न पद का प्रयोग किया जाता है-

मूरतिमान सिंगार सहचरी, सजि लाई आरति सिंगार की.
आनि दई कर अग्रवति कें, कहा कहों सोभा कनक थार की.
अदभुत रीति उतारति वारति, निरखि सुछबि विवि वर उदार की.
श्री हरिप्रिया पुलक अँग-अँग में, बाढ़ी उर उमँगनि बिहार की.[10]

श्रृंगार आरती के पश्चात् श्री राधाकृष्ण कुँजविहार करते हैं. इस समय निम्न पद का गायन किया जाता है-

---

[7] हरिव्यास देव जी, महावाणी, सेवा सुख, पद संख्या -27, पृ. 76

[8] वही, पद संख्या-28, पृ. 76

[9] वही, पद संख्या-29, पृ. 76

[10] वही, पद संख्या-30, पृ. 77

चलो तहाँ ते उरन उमँहियाँ.
बिरहत कुंजन कुंजन मँहियाँ..
चाल मराल दिये गरबँहियाँ.
तिरछी चितवति निरखत छँहियाँ..
आसपास सोहें सब सँहियाँ.
जुगलचंद मुख रूख चष चँहियाँ..
कोउ कर चौंर मोरछल गहियाँ.
अप अपनी सब सोंज सजहियाँ.
बर बिहार वै सम बिहरहियाँ.
'श्री हरिप्रिया' प्रमोद प्रदहियाँ.[11].

कुंजबिहारी कुञ्ज बिहारिनी कुंजबिहार री.
रंगद रसद रहसि वसुदादिक रमत सुरूचि अनुसारें री..
अमृत कुंज को अमृत लौ लौ पी पी प्रान प्रतिपारें री.
फलकल चलदल थल-विथलनि में 'श्रीहरिप्रिया 'संचारे री.'[12]

कुन्जविहार के पश्चात् श्रीराधाकृष्ण को जल पिलाया जाता है. जिसे जलवरना कहते हैं. इस समय निम्न पद गाया जाता है-

जै जै अल्कलड़े सुकुँवार.
जै जै नित्यकिसोरी जोरी जीवनि प्रान अधार.
जै जै मोहन की उर माला जै राधा उरहार.
जै जै 'श्री हरिप्रिया' जुगल पर पीवत पानी बार..[13]

जलवरना के पश्चात् दोपहर का भोजन राजभोग आरती करते हैं. इस समय निम्न पदों का गायन होता है-

भोजन कुंज में आये दोऊ, भोजन करन सुहाये री
हित सहेली हित चित अनुसरि, कटि आदर पधरायेरी.
विधिपूर्वक बैठें आसन पर, अंग-अंग सचुपाये री.
'श्री हरिप्रिया' आरोगत रूचिसों, विविध भोग मन भाये री..[14]

---

[11] वही, पद संख्या-31, पृ. 77

[12] वही, पद संख्या-32, पृ. 78

[13] वही, पद संख्या-36, पृ. 79

भोजन करत लाड़िली लाल.
रतन जटित कंचन चौकी पर
आनि धारयौ सहचरि भरि थाल..
छप्पन भोग छत्तीसों षटरस;
लौह्य, चोष्य, भक्ष्य, भोज्य रसाल.
जेंवत जाहि सराहि सरस अति,
परसत रंग रँगीली बाल..
जे जे विंजन कर पलवनि ते,
छुबति छबीली छई छवि जाल.
ते ते विंजन ताहि ठौर ते,
लोत छबीलो होत निहाल..
इहि विधि राजभोग आरोगत,
सुख संभोगत नैंन विसाल.
'श्री हरिप्रिया' परस्पर दोऊ,
परम प्रवीन प्रेम प्रतिपाल..[15]

राजभोग आरती के पश्चात् आचमन कराने का विधान है. इस समय निम्न पद का गायन होता है-

अचवन करत लाड़िली लाल.
कंचन झारी गहत परस्पर, श्री राधागोपाल..
जल मुख लोतहि हंसत हँसावत, देखत सखिन के जाला
राधामाधव खोलत रत भये, 'श्रीभट' परत विचाल..[16]

आचमन के पश्चात् भगवान को पान खिलाते हैं. इसे बीरी भी कहते हैं. इस समय के लिए निम्न पद हैं-

प्यारी जू को बीरी खवावत मोहना.
सुन्दर मुख सुख देख्यौ चाहत, नन्द नंदन पिय सोहना..
जदपि न लोत लड़ैती कर तें, करत विनय परि गोहना.
'श्रीभट' निपट दीन तन देख्यौ, मुसकि दियो मुख टोहना..[17]

---

[14] वही, पद संख्या-33, पृ. 78

[15] वही, पद संख्या-34, पृ. 79

[16] श्री भट्ट जी, युगल शतक, पद संख्या-43, पृ. 23

पद-

गोपाल जू कों पाल खवावत भामिनी.
परम प्रिया गुन रूप अगाधा, श्री राधा निज नामिनी.
कर अँकमाल पीक मुख लसहीं, विलसहिं ज्यौं घन दामिनी
जै 'श्रीभट्ट' कूट मर्कत तट, खिली सरद मनु जामिनी..[18]

बीरी के पश्चात् राजभोग आरती होती है. इसमें निम्न पदों का प्रयोग होता है-

अचवन करि अरोगे बीरी, हित प्रमोदिका आरति कीरी.
निरखि-निरखि छवि नैंनन नीरी, भई सखियनकी आँखियाँ सीरी.
मुदित महा मनमोद मतीरी, जै-जै उचरति धरत न धीरी.
'श्री हरिप्रिया' जोरी नवलीरी, अलबेली अरू लाड़ लड़ीरी.[19]

राजभोग आरती के पश्चात् मध्याह्न शयन कराते हैं. उस समय निम्न पद का गायन किया जाता है-

दोहा-

मन मोहन मोहन-महल, पौढ़े जाय प्रज्यंक.
प्यारी सहचरी सब रहीं, न्यारी करन निसंक..[20]

मोहन-मोहिनी मन-रंजन.
भुजा परस्पर अंसनि दीनें चलत हंस गति गंजन..
मोहन-मंदिर महामनोहर करि प्रवेस सुख संजन.
प्यारी सखी रही न्यारी जहँ, 'श्री हरिप्रिया' भय भंजन.[21]

मध्याह्न शयन के पश्चात् भगवान को (अपराह्न उत्थापन) जगाया जाता है. इस समय निम्न पद का गायन होता है-

घरी चारि, दिन रह्यौ जानि के, सहचरि आनि जगावैं.
'श्री हरिप्रिया' सुखद सेज्या तें, सुमनासन पधरावैं..[22]

---

[17] वही, पद संख्या-45, पृ. 24

[18] हरिव्यास देव जी, महावाणी, सेवा सुख, पद संख्या -35, पृ. 79

[19] वही, पद संख्या- 40, पृ. 83,84

[20] वही, पद संख्या- 47, पृ. 87

[21] वही, पद संख्या- 47, पृ. 87

अपराह्न उत्थापन (जगाना) के पश्चात् भगवान को उत्थापन भोग लगाया जाता है. इस समय निम्न पद का गायन होता है-

तर मेवा अरू विविध मिठाई.
अरघ देइ सादर सुख सुंदरि,
सुंदर स्वरन थार भरि ल्याई,
सब सब रितु की सब सामग्री
सुखमय सरस सखी सरसाई.
आरांगत दोऊ अलबेलो,
कहि न परत हित की हितवाई..
अरस परस गरसा मुख देत,
दिवावति दंपति रूचि उपजाई.
अति रोचक अमृत अमृतावत,
बिच बिच बहुविधि विहँसि बढ़ाई..
मुदित महा मन मंजरि सुंदरि,
सहचरि सखी सहेली सुहाई.
'श्री हरिप्रिया' निरखि निरखि छवि,
हरखि-हरखि हियरे हुलसाई..[23]

उत्थापन भोग के पश्चात् श्री राधाकृष्ण वन-विहार करते हैं, इस समय निम्न पद का गायन किया जाता है-

फूलि चलो दोऊ लाल बिहारी
फूल सखी की फूल निहारी
फूली संग सोहें सहचारी,
अप अपनी सब सोंज सँवारी..
कोउ कर दुखत चोंर सुढारी,
कोउ मोरछल लिए बिजनारी
कोउ कर लियें डबा कोउ झारी,
कोउ लिए सुकर मुकर मनहारी..
देखत-देखत बन फुलवारी

---

[22] वही, पद संख्या- 32, पृ. 78

[23] वही, पद संख्या- 47, पृ. 87

सुख आसन बैठे सुखकारी
'श्री हरिप्रिया' जोरी जीय जियारी
प्रान प्रीतमा पीय पियारी..[24]

वन-विहार करने के पश्चात् संध्या-आरती होती है. इस समय निम्नपद का गायन होता है-

संध्या आरति करन सहेली. स्यामा स्याम गुन गर्व गहेली.
निरखि-निरखि छवि नैंन नवेली. अँग-अँग रंग रली अलबेली.
सोहति उर चौसर चंबेली. रस रंजन रूजति रति रेली.
तरू सिंगार प्रेम की बेली. 'श्री हरिप्रिया' हरत मन हेली.[25]

संध्या आरती के पश्चात् व्यारूभोग लगाया जाता है. इस समय निम्न पद का गायन होता है-

संग लिये सजनी पिय पियारी.
इहि बिधि घरी चार रजनी सुख
विलसी चलो दोउ करन बियारी.
अदन-सदन आये मन भाये,
पधराये करि सोंज तियारी.
'श्रीहरिप्रिया' प्रवीन परस्पर दोउ
दोउन के जीय जियारी..[26]

करत बियारी पिय प्यारी संग
अरस परस गरसा मुख देत-दिवावत,
अति उपजावत रति रँग..
मधुर दूध संमिलित मिश्रि भरि
कनक-कटोरे पीवत सोमँग.
'श्री हरिप्रिया' आरोगत रूचि सों
विविध पान पकवान पुलक अँग..[27]

व्यारू भोग के पश्चात् आचमन किया जाता है. इस समय इस पद का गायन होता है-

---

[24] वही, पद संख्या- 49, पृ. 83

[25] वही, पद संख्या- 50, पृ. 88

[26] वही, पद संख्या- 51, पृ. 88

[27] वही, पद संख्या- 60, पृ. 84

अंबु अंचकावति अंबुज बदनी.
कर लियें झारी कनक कटोरनि
भरि-भरि प्यावति अंबुज बदनी..
रचि-रचि बीरी देत दोउन कर
उर उमगावति अंबुज बदनी.
'श्री हरिप्रिया' चखि चाहि चकित रहि,
कहि नहिं आवत अंनुज बदन..[28]

आचमन के पश्चात् भगवान की शयन-आरती होती है. इस समय निम्न पद का गायन होता है-

आरति वारति अलि मृग नेंनी.
निज सहचरि इच्छा अनुसारिनि
समझि सैंन की सैना बेंनी..
जगमग जोति जगति दीपावलि
कनक थार मधि सचित सुचेंनी.
'श्री हरिप्रिया' हितवाय हियनि में,
लौ बलाय सनमुख सुख देंनी..[29]

शयन-आरती के पश्चात् भगवान-शयन करते है. इसमें भी पदों का गायन किया जाता है, जो निम्न है-

विहारिनी कीजिदै सुख सैंन.
श्रमित बदन सोहैं मन मोहैं, झपकोहैं नीरज नैंन..
अलबेली आनन्द की, हो आई अधरैंन.
'श्री हरिप्रिया' स्वामिनी हितू, सहेलिन की सुख दैंन..[30]

सुंदर सुहाई सुखदाई सुख सेज पर
हेज भरे पौढ़े, पलकें लगि गई.
भुज सिरहाने दियें हियेसों लगाय हिये

[28] वही, पद संख्या- 61, पृ. 95

[29] वही, पद संख्या- 63, पृ. 95

[30] वही, पद संख्या- 80, पृ. 105

प्रेम रस पियें पलकें लगि गई..
विपुत पुलक लस अंग आसल बस
अरसनि परस पलकें लगि गई.
श्री हरिप्रिया की जोरी नवलकिसोरी
ओढ़े पियरि पिछोरी पलकें लगि गई..[31]

हितू सखी हित को हितवाई.
पाँइ पलोति हरें हरें हटिकें,
पट दे झटि दे बहिर आई..
स्ंधनि मग लगि रूप माधुरी,
अवलोकति सहचरि समुदाई..
'श्री हरिप्रिया' की सहज सुरति रति,
गान करति मधुरे मनभाई..[32]

इन पदों के पश्चात् दोहों का गायन होता है-

रसिक रंग रेली सबै, रसिक सहेली गाय.
आवैं निज निज कुंज में, लालौं लाड़-लड़ाय..
इहि विधि सेवा सुखसमै, मंलग सैंन प्रज्यंत.
ध्यावैं सो पावैं सदा, परम तंत को तंत..[33]

इस प्रकार अष्टयाम सेवाओं में प्रातःकालीन मंगला से लेकर शयन-आरती तक की सम्पूर्ण सेवाओं में समयानुसार रागों का गायन किया जाता है. यह सेवा नित्य होती है. राग विधान की दृष्टि से अष्टयाम सेवाओं का स्वरूप इस प्रकार है- प्रातःकालीन झाँकियों में जहाँ ग्रीष्मकाल में विलावल, सारंग गाये जाते हैं, वहीं शीतकाल में तोड़ी व आसावरी राग गाये जाते हैं. इसी प्रकार शाम की झाँकियों में उत्थापन भोग के रागों में कोई अन्तर नहीं है, पूर्वी, गौरी व नट का प्रयोग ही मिलता है. शयन में केदार, बिहाग, गर्म राग व कल्याण, हमीर, अड़ाना ठण्डे राग माने गये हैं.

निम्बार्क सम्प्रदाय के वर्षोत्सवों में संगीत का प्रयोग- निम्बार्क सम्प्रदाय में वर्षोत्सवों का विशेष महत्व है. दैनिक क्रम, साधारण दिनों के लिए तथा वार्षिक क्रम, वर्ष के उत्सवों के लिए होता है, इसलिए इसे वर्षात्सव क्रम भी कहते हैं. उत्सवों पर सेवा के प्रत्येक अंग (राग, भोग व श्रृंगार) का एक विशेष प्रयोजन रहता है. इस सम्प्रदाय में उत्सवों पर

[31] वही, पद संख्या- 64, पृ. 95

[32] वही, पद संख्या- 65, पृ. 96

[33] वही, पृ. 95

विशेष रूप से सांगीतिक विधाओं का प्रयोग किया जाता है. जैसे- समाज गायन, रासलीला, नृत्य आदि. अब इस सम्प्रदाय के कुछ विशिष्ट उत्सवों में होने वाले सांगीतिक प्रयोग का अवलोकन किया जा रहा है-

इस क्रम को सर्वप्रथम भगवान कृष्ण के जन्म से प्रारम्भ करते हैं. इस सम्प्रदाय में कृष्ण जन्माष्टमी काफी उल्लास के साथ मनाया जाता है. इस दिन सम्प्रदाय के आचार्या द्वारा रचित वाणी ग्रन्थों के पद कृष्ण-जन्म के बाद गाये जाते हैं, जो निम्न हैं-

(दोहा)

भागवती जसुमति अति, भई प्रफुलित लषि लाल.
गोकुल मंगल आज सषि, बाढ़यौ विसद विसाल.[34]

पद – बधाई

गोकुल मंगल आजु बधाई.
रानी जसुमति के प्रगटे हैं, सुंदर कुँवर कन्हाई..
गोपी ओपी थार लिये कर, रवि शशि देवि लजाई.
गावत धावत अलि छवि पावत, मूरति लगति सुहाई..
देषि देषि मुष श्यामसुन्दर कौ, अँग अंगनि सचुपाई.
भागमती जसुमति रानी अति, सुत जायौ सुषदाई..
निरतत कीरति मुषिया निज मुष, कहि कहि बहुत बड़ाई.
जै श्रीभट रसिक भक्तनि मन, भई महा मुदिताई..[35]

इसके अतिरिक्त नृत्यों का भी आयोजन किया जाता है.

यहाँ राधा जी का भी जन्म विशेष रूप से मनाया जाता है. इसमें भी पदों का विशेष गायन होता है. उनमें से कुछ पद (बधाई) प्रस्तुत हैं-

आज ब्रजजन मिलि मंगल गावैं.
गोपी गोप भाग कीरति के, गाय गाय प्रगटावैं..
प्रगटी श्रीराधा रूप अगाधा, सब सुष साधा नावैं.
मिलि आये नंदादिक सबही, प्रेम परसपर भावैं..
कोइक गावैं कोई बजावैं, कोई दही लौ धावैं.
आय आय बरसाने बीथिन, जै जैकार करावैं.

[34] श्री भट्ट जी, युगल शतक, पद संख्या- 95, पृ. 51

[35] वही, पद संख्या- 96, पृ. 52

भानु नंद सौं मिलो धाय कैं, अंक सों अंक लगावैं.
(जै) श्रीभट निकट निहारि राधिका, श्याम नैन सचु पावैं..[36]

इसके अतिरिक्त नृत्यो का और राधा जी के जन्म की लीला का रासलीला के माध्यम से दर्शन भी कराया जाता है. एक विशाल संगीत समारोह का भी आयोजन होता है. इसमें देश के बड़े-बड़े कलाकारों को गायन, वादन और नृत्य प्रस्तुत करने का सुअवसर प्राप्त होता है.

इस सम्प्रदाय में श्री राधा-कृष्ण का विवाह उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है. बड़े ही पारम्परिक ढंग से भगवान का विवाह किया जाता है. इस समय गाये जाने वाले पद अग्रांकित हैं-

वेदी पुलिन विराजहीं, मंडप वेलि तमाल.
नच्यौ किधौयह रच्यौ है, व्याह बिहारीलाल..[37] (दोहा)

पद

श्री ब्रजराज के युवराज मानौ, व्याह वृन्दावन रच्यौ.
पुलिन वेदी विराजें दंपति, देषि देषि सषि मन सच्यौ..
है पुरोहित रिचा उचारत, वेलि तमाल मंडप षच्यौ.
जै श्री भट भाँवरिपरत नटवर, अंकमाल प्रिया संग नच्यौ.[38]

इसके अतिरिक्त संगीत के विविध विधाओं जैसे नृत्य, वाद्य-वादन आदि का भी आयोजन किया जाता है. इसके अतिरिक्त यहाँ हिन्डोल, होली, बसन्त, आचार्यों का पाटोत्सव आदि उत्सवों पर संगीत के विविध विधाओं का आयोजन किया जाता है. इस प्रकार वर्षभर के सभी उत्सवों में संगीत की प्रधानता दीखती है.

अतः निम्बार्क सम्प्रदाय की भक्ति में संगीत का विशेष महत्व है, इसलिए इस सम्प्रदाय की भक्ति रसोपासना भक्ति कहलाती है.

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1. गोस्वामी, शरण बिहारी. *कृष्ण भक्ति काव्य में सखी भाव*, चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1957
2. जय किशोर शरण (संपादक), *स्तुति संकीर्तन*, श्री जी मंदिर, वृंदावन ,तृतीय संस्करण ,विक्रमी संवत 2031

[36] वही

[37] वही, पद संख्या- 65, पृ. 96

[38] वही

3. देव, श्री भट्ट. *युगल शतक (सेवा सुख)*, निंबार्क पीठ सलेमाबाद, प्रथम संस्करण, वि.स. संवत 2009
4. देव, हरि व्यास. *मह वाणी(सेवा सुख)*, श्री निंबार्क प्रकाशन ट्रस्ट श्री जी मंदिर ,वृंदावन, द्वितीय संस्करण, सन 1975
5. ब्रज वल्लभशरण (सम्पा), *श्री सर्वेश्वर पत्रिका (व्रजविहार अंक)*, श्री निम्बार्काचार्य पीठ सलेमाबाद, मार्च 1971, अंक 1,2
6. मीत्तल, प्रभुदयाल. *ब्रज की कलाओं का इतिहास*, साहित्य संस्थान मथुरा, प्रथम संस्करण, 1975
7. मीत्तल, प्रभुदयाल. *ब्रज के धर्म सम्प्रदाय का इतिहास*, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1968
8. श्रीवास्तव, आरती. *ब्रज-रास में संगीत (उत्पत्ति, विकास और स्वरूप)*, राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण्, 2003